ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(10): 180-182
www.allresearchjournal.com
Received: 19-08-2019
Accepted: 21-09-2019

डॉ. देवेश कुमार मिश्र
वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. देवेश कुमार मिश्र
वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

वाल्मीकि रामायण और उत्तरवर्ती राजनीतिक व्यवस्थाएं

डॉ. देवेश कुमार मिश्र

संक्षेप

वाल्मीकि रचित रामायण एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें विश्व के सभी समुदायों की चिंता की गई है। विश्व की सभी भाषाएं, संस्कृतियां, जातियां तथा भौगोलिक परिस्थितियां, यह सभी जंबूद्वीप के भारतवर्ष में भी पाई जाती हैं। राम के अयोध्या से श्रीलंका तक की विजय यात्रा में गंगा जमुना के मैदानों से निर्मित भूभाग से लेकर विंध्याचल के सघन पर्वतों को स्पर्श करते हुए,दक्षिण के पठारी भाग होते हुए, तमिलनाडु के सागर तटीय भूभाग को अनुभूत कर, श्रीलंका तथा भारत के बीच में सेतु बनाकर श्रीलंका तक की विजय की स्थितियों का वर्णन ही इस बात का साक्षी है कि, मूल इतना विस्तृत है तो भविष्य का विस्तार कितना विस्तृत होगा। अनेक नदियों, सरोवरों, का पानी पीते हुए उत्तर भारत और दक्षिण भारत की अनेक बोलियों को समझते हुए, विंध्याचल के पर्वतों, दक्षिण भारत की उन्नत शिखरों के आदिवासी, वनवासी, वानर भालुओं को संगठित करके राम ने इस देश की एकता और अखंडता की परिभाषा रच दी है। हजारों वर्ष पूर्व यह कार्य हुआ। किंतु रामायण काल के बाद महाभारत में सभी आदर्श गिरते हुए दिखाई दिए। महाभारत के कारण देश के सांस्कृतिक व्यवहार में गिरावट आई। बाद में राजवंशों हर्यक वंश, मौर्य वंश, गुप्त वंश, शुंग वंश, चोल वंश, पल्लव,चालुक्य तथा परमार तोमर आदि वंशों द्वारा भारतीय राजनीति को दिशा देने का प्रयास किया जाता रहा।

कूट शब्द: वाल्मीकि रामायण, उत्तरवर्ती राजनीतिक व्यवस्थाएं

प्रस्तावना

उत्तरवर्ती राजाओं के प्रयास

रामायण काल के पश्चात् प्रमुख राजाओं का प्रयास यही रहा कि वे अपने-अपने राज्यों में राम राज्य जैसे वातावरण की प्रतिष्ठा करें। मौर्य वंश के राजा चंद्रगुप्त, सम्राट अशोक, बिन्दुसार आदि राजाओं को कुछ सीमा तक तो सफलता मिली। लिखित इतिहास इस बात का साक्षी है कि योग्य उत्तराधिकारियों का अभाव होने के कारण मौर्य वंश से लेकर सभी राजाओं की शासन व्यवस्थाएं कालांतर में चलकर समाप्त हो गईं। हर्षवर्धन की शासन व्यवस्था के साथ-साथ किसी न किसी स्थिति में राम राज्य की अवधारणा के अनुकूल राजाओं ने अपनी-अपनी शासन व्यवस्थाओं के द्वारा भारत के अंतर्गत राजनीतिक स्थिरता का प्रयास किया।

सातवीं शताब्दी में अरब में इस्लाम का उदय हो जाने के बाद बर्बरतापूर्ण हिंसा के द्वारा पूरी दुनिया के इस्लामीकरण के नाम पर अनेक देशों का इस्लामीकरण हो गया। इस प्रकार के कृत्यों के द्वारा इस्लाम के अनुयायियों और खलीफाओं नें इस्लाम के नाम पर अपनी अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति की।

उत्तर भारत में केवल पृथ्वीराज चौहान तक तथा दक्षिण भारत में राजा कृष्णदेव राय तक बर्बर मुस्लिम आक्रांताओं से भारत का विशाल भूभाग सुरक्षित रह सका था। मोहम्मद गोरी से लेकर मोहम्मद बिन कासिम तक के सभी आक्रमण राम की संस्कृति पर रावणी आक्रमण जैसे थे। इतना ही नहीं इस प्रकार के कुत्सित वातावरण के कारण भारतीय जनता में अनेक दुर्गुण घर कर चुके थे। इन्हीं दुर्गुणों के कारण रामराज्य के वातावरण के लिए जिस प्रकार भ्रातृ एकता आवश्यक होनी चाहिए उस प्रकार की ना होने से भारत का वातावरण हीन हो गया। भारत में बंधुत्व, भ्रातृ एकता जैसी चीजें केवल वाणी का विलास रह गई थी, भारतीय संगठित नहीं थे।

वाणी से राम को आदर्श मानना और कर्म से न मानना यह भारतीय समाज का दुर्गुण हो चुका था। सांस्कृतिक और सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ साथ सभी प्रकार की प्रतिबद्धताएं होनी आवश्यक थी। जो अरब से आक्रमणकारी लुटेरे आए थे, उनकी आंधी को भगाने के लिए केवल भारतीय समाज में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न जैसे एकमत भाइयों की आवश्यकता थी। किंतु दुर्भाग्यवश, आपसी फूट के कारण भारत की पवित्र भूमि पर आक्रांताओं ने रक्तपात किए।

मुस्लिमों के शासनकाल में भारत में हिंदुओं की लाशों के ढेर बनाकर मीनार बनाई गईं। जो दृश्य राम ने विश्वामित्र के साथ जाते हुए वन में देखे थे उसी प्रकार के दृश्य निर्दोष मनुष्यों की हड्डियों के ढेर के रूप में मुस्लिम शासन काल में देखने को मिले। निर्दोष वैदिक मतावलम्बियों की हत्या की गई और भारत में मंदिरों को नष्ट भ्रष्ट किया गया।

मुसलमानों द्वारा हिंदुओं को काफिर समझा गया तथा बलपूर्वक धर्म परिवर्तन कराया गया। मध्यकाल की बर्बरता मुसलमानों की देन है। जब इस्लाम कुबूल करवाने के लिए असंख्य हिंदुओं की गर्दन काटी गई और अनेक हिंदुओं को मुसलमान भी बनाया। इतना करने के बाद भी जब राम संस्कृति का विलोप नहीं हो पाया तब मुस्लिम शासकों ने हिंदुओं पर जजिया कर लगाया। यही मानव सभ्यता के इतिहास का सबसे बड़ा कलंक रहा है। किंतु प्रबलता के साथ कहने में कोई संकोच नहीं है की राम संस्कृति की विशेषता ने ही इतने बड़े-बड़े अत्याचारों के बाद भी भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को संजोए रखा और आज भी उसी प्रकार के वातावरण की झंकार उठती है। यही कारण है कि भारत मिट नहीं सका।

मेसोपोटामिया जैसा प्राचीन देश भी धर्मान्तरित हो गया। यूरोप एशिया तथा अफ्रीका के अनेक देशों का इस्लामीकरण करता हुआ इस्लामी तूफान भारत में केवल राम संस्कृति के कारण ही बिना किसी क्षति के गुजर गया लेकिन भारत की जो क्षति हुई वह हमें अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा भारत में रह रहे 20 करोड़ से अधिक मुसलमानों के रूप में सहन करनी पड़ रही है।

राम की संस्कति के महान योद्धा पृथ्वीराज चौहान, कृष्णदेव राय, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, छत्रसाल, गुरु गोविंद सिंह तथा महाराजा रणजीत सिंह आदि के द्वारा जिस प्रकार के संघर्ष किए गए वे बिल्कुल लक्ष्मण, सुग्रीव, नल नील अंगद, हनुमान तथा जामवंत द्वारा किए गए संघर्षों से कम नहीं रहे होंगे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस्लाम की ताकत को रोकने के लिए भक्ति काल की रामाश्रय भक्ति धारा का बहुत बड़ा योगदान है।

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस ने तो संपूर्ण भारत को ही राममय बना दिया था, इतना ही नहीं रामचरितमानस की छाप ने ही ब्रिटिश काल के शासन में भी भारत को भारत बनाए रखा। इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस के द्वारा वैदिक सनातन हिन्दू धर्म में मानवता की रक्षा के साथ-साथ अन्य देशों में ले जाए गए हिंदू मजदूरों के हिंदू धर्म की भी रक्षा की। रामचरित मानस की चौपाइयों के धन के बल पर ही लोग अपने जीवन को जीने लगे। मजदूरों ने विदेशियों के अत्याचार चाहते हुए भी चौपाइयों के आधार पर ही अपनी संस्कृति की रक्षा की। अत: कहना पड़ेगा कि रामायण की राम संस्कृति नहीं होती तो सभी मजदूर ईसाई बन गए होते।

मारीशस, सूरीनाम, दक्षिण, अफ्रीका आदि देशों में जो भी भारतीय मजदूर गए थे, उन मजदूरों को गिरमिटिया कहा जाता था। इन मजदूरों को अंग्रेजों ने अपनी धूर्तता का पाठ पढ़ा कर विदेश में भेजा था। जब भारतीय मजदूरों को यह पता चला कि वे लोग मूर्ख बनाए जा चुके हैं और उनके द्वारा उन्हें पीड़ित किया जा रहा है तो इन मजदूरों ने रामचरित मानस की चौपाइयों को ही गाकर अपने मन की थकान दूर करके गुजारा करने का प्रयास किया। क्योंकि अशांत मन और पीड़ित काया को शांति देने के लिए साहित्य के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है।

यह गिरमिटिया मजदूर 16 घंटे की कठोर परिश्रम के बाद भी रात को रुखा सूखा खाकर रामचरित मानस की चौपाइयों को टूटी-फूटी जानकारी के अनुसार ही गाकर अपना जीवन बिताना धर्म समझे। इसीलिए इनमें भारत जागृत रहा।

उपर्युक्त ऐतिहासिक तथ्यों के अतिरिक्त रामायण का आज तक की राजनीतिक व्यवस्था ऊपर प्रभाव चला आ रहा है। अंग्रेजों के शासन काल में महात्मा गांधी की राम राज्य की अवधारणा अथवा जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, अथवा वंदे मातरम्, आदि जैसे अमृत वाक्यों की अद्भुत सांस्कृतिक शक्ति हो, सभी ने केवल भारतीय संस्कृति की रक्षा में और उसकी निरंतरता बनाए रहने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

आज भी हमारे आजाद भारत का संविधान राम राज्य के जैसा लोक कल्याणकारी राज्य की कल्पना करके उसको अपना मानते हुए भारत के लोकतंत्र का सफल संचालन कर रहा है। मेरा तो यह मानना है कि भारत चाहे जितना विकसित हो जाय, भारत के पास चाहे जितनी तकनीकी ज्ञान संपदा हो जाय अथवा भारत नवीन परिवेश के अनुसार नए-नए खोजों में अग्रणी ही क्यों ना हो जाए। किंतु भारत राम के बिना भारत नहीं हो सकता। राम को अलग करके भारत की संकल्पना की ही नहीं जा सकती। राम के प्रभाव से हीन होकर आतंकवाद की विभीषिका जैसा मार्ग अपनाकर पाकिस्तान जैसा निन्दित संस्कृति का देश कहां मिलेगा।

रामद्वारा जितना आचरित है, उसी पर भारतीय संविधान की प्रकृति टिकी हुई है। जब तक उस प्रकृति के अनुसार भारत की शासन व्यवस्था का संचालन नहीं होता, तब तक देश को दीनता, हेयता जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ जाता है। पिता और पुत्र का कर्तव्य, पति और पत्नी का कर्तव्य हो, सेवक और स्वामी का कर्तव्य हो, राजा तथा प्रजा का कर्तव्य हो किन्हीं भी परिस्थितियों में प्रेरणा का आधार तो केवल राम द्वारा आचरित जीवन ही है।

मर्यादा की रक्षा करते हुए जनता की सेवा के लिए हर समय उपलब्ध रहना यही रामराज्य की संस्कृति है। वर्तमान भारतीय सामाजिक व्यवस्था के सफल संचालन के लिए इसी आचरण के नेतृत्व की आवश्यकता है। वाल्मीकि रामायण का उत्तरवर्ती राजनीतिक व्यवस्थाओं पर बहुत ही व्यापक प्रभाव पड़ा है। अश्वघोष रचित बुद्धचरित महाकाव्य में तत्कालीन, राजकीय मर्यादाओं तथा उच्च राजनीतिक मूल्यों के वर्णन इसी बात का संकेत करते हैं।

बुद्ध चरित में ही राजकुमार के गृह त्याग की घटना इस बात का प्रबल प्रमाण है।

जरा मरणनाशार्थं प्रविष्टोस्मि तपोवनम
न खलु स्वर्गतर्षेध नास्नेहेन न मन्युना।।

श्लोक का भावार्थ यह है कि राजकुमार यह बताना चाहते हैं कि वे अन्य किसी कारण से बन में नहीं आए हैं बल्कि जरा और मृत्यु का नाश करने के लिए ही तपोवन में आए हैं।

तात्पर्य है कि उक्त श्लोक में राजकुमार का अपने राज्य के भूभाग के प्रति चिंतित न रहना, बल्कि इस बात की चिंता रहना कि उनका लोक और परलोक दोनों किस प्रकार सुदृढ़ होगा। इन प्रसंगों से यही शिक्षा मिलती है कि भारत की शासन व्यवस्था विलास आधारित न होकर वैराग्य आधारित है।

रामायण के उत्तर काल में महाभारत काल के बाद मौर्य साम्राज्य ही एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में उभरा था। नंद वंश का शासन बिलासी शासन था। नंद वंश के विलासिता पूर्ण शासन को भ्रष्ट करके तक्षशिला के आचार्य चाणक्य ने एक साधारण से बालक चंद्रगुप्त मौर्य को पाटलिपुत्र का सम्राट बनाया था।

चाणक्य अपने कालखंड में उच्च कोटि का विद्वान तो था ही बल्कि सर्वोच्च कोटि का राजनीतिज्ञ भी था। चाणक्य ने अपने शिष्य चंद्रगुप्त मौर्य को अनेक राजनीतिक सूत्रों से दीक्षित किया था। आचार्य चाणक्य को उस कालखंड में राजनीति का मौलिक ज्ञाता तो समझना ही चाहिए बल्कि उन्हें विदेश नीति, राजनयिक संबंध, राजा के कर्तव्य एवं कार्य, राज्य संचालन के नियम, जनता का राज्य के प्रति कर्तव्य आदि सभी नीतियों का ज्ञाता समझना चाहिए।

चाणक्य के कुछ सूत्रों पर दृष्टिपात् करने से ही पता चल जाता है कि उनकी राजनीतिक विलक्षणता क्या थी -

1. सुखस्य मूलं धर्म:
2. धर्मस्य मूलं अर्थ:
3. अर्थस्यमूलं राज्यम्

इन सूत्रों का भाव यह है कि धर्म की रक्षा करने पर ही सुख मिलता है धर्म का ही मूल अर्थ है, अथवा प्रयोजन है। अर्थ ही राज्य की व्यवस्था में मूल होता है अथवा किसी भी राज्य या राष्ट्र की उन्नति उसकी अर्थव्यवस्था पर निर्भर होती है।

इसी प्रकार आगे के सूत्रों में चाणक्य कहते हैं कि इंद्रियों को वश में रखकर ही राज्य को स्थिर रखा जा सकता है। मनुष्य जब तक विनम्र नहीं होता है तब तक वह इंद्रियों पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। प्रजा द्वारा नीति पूर्वक आचरण किए जाने पर यदि किसी कारणवश राजा का अभाव भी हो जाए तो भी राज्य उसी प्रकार चलता रहता है ऐसा चाणक्य का मानना है।

निष्कर्ष-चाणक्य के सूत्रों पर बात करते समय राज्य की सभी नीतियां दृष्टिगोचर हो जाती है। रामायण काल के बाद राम के आचरण को स्मरण करते हुए उत्तरवर्ती राजाओं ने भारत में राम के आदर्शों पर चलने वाले राज्य के नियमों का पालन

करके, प्रजा पालन और राष्ट्र की रक्षा का भरपूर प्रयास किया। यही कारण है कि अनेक आक्रमण और अत्याचारों के पश्चात भी भारतीय संस्कृति में राम के आदर्श समाप्त नहीं किए जा सके। उन्हीं के आदर्शों का पालन करके उनके वनवास काल में भरत ने अयोध्या का राज्य चलाया था। यही कारण है कि परवर्ती काल में चाणक्य ने अपनी प्रतिभा से चंद्रगुप्त को तैयार करके राम के आदर्शों का पालन करवाया होगा और तभी भारत माता के गौरव की रक्षा हो पाई होगी। कोई भी शासक, मंत्रियों की उचित प्रेरणा के अभाव में अपने कर्तव्य तथा अकर्तव्य का निश्चय नहीं कर सकता ऐसा चाणक्य का मानना है। क्या रामायण में जामवंत की मंत्रणा चाणक्य के इस मंतव्य से कम है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परवर्ती काल में शासकों और आचार्यों ने राम के आदर्शों की चिंता करते हुए ही भारतीय शासन व्यवस्था के मार्ग पर चलने का प्रयास किया।

सन्दर्भ

1 वाल्मीकि रामायण, हिंदी टीका सहित गीता प्रेस प्रकाशन गोरखपुर
2 कौटिल्य का अर्थशास्त्र, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
3 चाणक्य नीति दर्पण, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी हिंदी संस्कृत सहित
4 तुलसीदास ग्रंथावली, मोतीलाल बनारसीदास संस्करण वाराणसी
5 रामचरितमानस, गीता प्रेस प्रकाशन गोरखपुर हिंदी टीका सहित
6 मध्यकालीन इतिहास, डॉ हरिश्चंद्र वर्मा